रोटरी क्लब, उदयपुर द्वारा आलोक संस्थान में एक प्रतिमा के अनावरण के उपलक्ष्य में आयोजित समारोह में माननीय अध्यक्ष के उपयोग हेतु प्रारूप भाषण।

दिनांक 19 फरवरी, 2020

रोटरी क्लब, उदयपुर

आज यहां आप सबके बीच आकर मुझे हार्दिक प्रसन्नता हो रही है। प्रसिद्ध शिक्षाविद और आलोक संस्थान के संस्थापक, श्री श्यामलाल कुमावत जी की प्रतिमा का अनावरण करना मेरे लिए बहुत सम्मान की बात है।

श्री श्यामलाल कुमावत जी जैसे दूरदर्शी व्यक्ति को पाकर राजस्थान की धरती धन्य हो गई। उन्होंने शिक्षा के क्षेत्र में प्रचुर योगदान दिया है। हम सभी जानते हैं कि शिक्षा राष्ट्र निर्माण में एक महत्वपूर्ण कारक है।

मित्रो, भारत जैसे विकासशील देश में शिक्षा अत्यंत मूल्यवान है। राष्ट्र निर्माण हम सभी नागरिकों का परम कर्तव्य है और इस प्रक्रिया में शिक्षा की केन्द्रीय भूमिका है। इस संदर्भ में शिक्षा एक मूल्यवान साधन का काम करती है।

आज रोटी, कपड़ा और मकान के समान ही शिक्षा भी जीवन की एक बुनियादी आवश्यकता बन गई है।

शिक्षा एक ऐसा शक्तिशाली हथियार है जो व्यक्ति को न केवल शैक्षिक कौशल प्रदान करता है बल्कि उसे जीवन की चुनौतियों का सामना करने के लिए भी तैयार करता है।

शिक्षा व्यक्ति को ऐसे ज्ञान एवं नवीन कौशलों के अर्जन का सामर्थ्य प्रदान करती है जो एक बेहतर और समृद्ध जीवन के लिए अनिवार्य होते हैं।

शिक्षा हमारे भीतर की क्षमताओं को साकार करने में सहायता करती है। यह हमारी क्षमताओं को एक ऐसी शक्ति में रूपांतरित करती है जो अज्ञान के अंधेरे को दूर कर ज्ञान के प्रकाश को फैलाती है।

शिक्षा के माध्यम से विद्यार्थियों, शिक्षकों और व्यापक अर्थों में समाज को अत्यधिक सम्मान प्राप्त होता है। इससे राष्ट्र के साझे लोकाचार एवं मूल्यों को आत्मसात करने और प्रगति के पथ पर आगे बढ़ने का प्रोत्साहन मिलता है।

साथियो, कहा जाता है कि "एक बच्चे का मन कोरे कागज की तरह होता है।" यदि बच्चे को समुचित रूप से शिक्षित किया जाए अर्थात् उसके कोरे मन पर सही समय पर सही बातों की छाप छोड़ी जाए तो बड़ा होकर वह राष्ट्र के लिए एक उपयोगी एवं मूल्यवान मानव संसाधन बनता है।

डॉ. राधाकृष्णन ने एक बार कहा था कि 'हमें वैसी ही शिक्षा प्रदान करनी चाहिए जैसा समाज हम बनाना चाहते हैं।'

आज हम मानवीय गरिमा एवं समानता के मूल्यों पर आधारित एक आधुनिक लोकतांत्रिक समाज निर्मित करने का प्रयास कर रहे हैं। लेकिन ये सब अभी आदर्श ही हैं। जरूरत इस बात की है कि हम इन्हें जीवंत शक्तियों के रूप में व्यावहारिक स्तर पर उतारें।

भविष्य की हमारी संकल्पना में ये महान सिद्धांत शामिल होने चाहिए।

अत: हमें वैसी ही शिक्षा प्रदान करने का प्रयास करना चाहिए जैसी शिक्षा का स्वप्न स्वामी विवेकानंद जी ने देखा था। 'उन्होंने कहा था कि शिक्षा का अर्थ मात्र जानकारी हासिल करना नहीं है। अधिकांशत:, शिक्षा के नाम पर मस्तिष्क में केवल जानकारियों का अंबार भर दिया जाता है जिसे मनुष्य जीवन में कभी भी अपने व्यक्तित्व एवं चिंतन में आत्मसात नहीं कर पाता है। इसके विपरीत, वस्तुत: शिक्षा जीवन-निर्माण, चरित्र-निर्माण और मनुष्य-निर्माण हेतु विचारों को आत्मसात करने की प्रक्रिया है।'

जब हम वास्तविक अर्थों में शिक्षित होते हैं तो, हम दूसरों के साथ सौहार्दपूर्वक रहना सीख लेते हैं। वास्तविक मायने में शिक्षित होने का अर्थ यही है।

डिग्री का अपना रोजगारपरक महत्व तो है, लेकिन असली शिक्षा तो हमारे व्यवहार और आचरण में प्रतिबिंबित होती है। शिक्षा से हमारे भीतर विनम्रता की भावना का विकास होना चाहिए। विनम्रता लोगों को जोड़ती है, जबकि उदण्डता लोगों को विभाजित करती है। इसीलिए हमें शिक्षा को मूल्यों के दृष्टिकोण से देखना चाहिए, न कि मात्र डिग्री के दृष्टिकोण से।

स्वतंत्रता के पश्चात् से ही प्रत्येक सरकार विभिन्न नीतियों और कार्यक्रमों के माध्यम से शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए गंभीर प्रयास करती रही है। इन प्रयासों के परिणामस्वरूप प्राथमिक शिक्षा का सार्वभौमिक प्रसार हुआ है, माध्यमिक शिक्षा में नामांकन में अत्यधिक वृद्धि हुई है और बीच में ही पढ़ाई छोड़ देने के मामलों में कमी आई है।

प्राथमिक शिक्षा अब संविधान के अनुच्छेद 21क के अंतर्गत एक मौलिक अधिकार बन गई है। इसके फलस्वरूप प्राथमिक शिक्षा तक अब प्रत्येक नागरिक की पहुंच सुनिश्चित हो गई है।

मानव विकास में शिक्षा की केन्द्रीय भूमिका को इस बात से भी समझा जा सकता है कि शिक्षा विश्व स्तर पर भी सतत विकास लक्ष्यों का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बन चुकी है।

सतत विकास लक्ष्यों के एक भाग के रूप में वर्ष 2030 तक सभी के लिए समावेशी एवं समतापूर्ण गुणवत्तायुक्त शिक्षा और जीवन-पर्यंत शिक्षा प्राप्त करने के अवसरों की उपलब्धता सुनिश्चित करने का लक्ष्य है।

मित्रो, युवा प्रतिभाओं का मार्गदर्शन करने में शिक्षकों के महत्व का उल्लेख किए बिना शिक्षा की बात अधूरी रह जाएगी। शिक्षक समाज की सबसे प्रभावशाली और शक्तिशाली ताकतों में से एक हैं।

इस संबंध में राष्ट्रपति अब्दुल कलाम के ये विचार अविस्मरणीय है : "शिक्षण एक बहुत ही महान व्यवसाय है जिससे व्यक्ति के चरित्र, क्षमता और भविष्य का निर्माण होता है। यदि लोग मुझे एक अच्छे शिक्षक के रूप में याद करते हैं तो मेरे लिए यही सबसे बड़ा सम्मान होगा|"

यह शिक्षकों पर निर्भर करता है कि वे युवा प्रतिभाओं का विकास करें और अपने भीतर छिपी क्षमताओं का पता लगाने में उनकी सहायता करें। इसी कारण से कहा जाता है कि एक अच्छा शिक्षक एक दीपक की तरह होता है - वह दीपक की भांति जलकर दूसरों का मार्ग रोशन करता है।"

आचार्य श्यामलाल कुमावत जी ऐसे ही एक महान शिक्षक थे, जिन्होंने अपना पूरा जीवन लोगों को शिक्षित करने के लिए समर्पित कर दिया।

बचपन से ही उनका झुकाव दूसरों की मदद करने की ओर था जो इस तथ्य से स्पष्ट है कि उन्होंने पढ़ाई में अपने सहपाठियों की मदद की।

उन्होंने विद्या निकेतन में प्राचार्य के पद पर रहते हुए विभिन्न क्षेत्रों में अपना नाम रोशन करने वाले सैकड़ों छात्रों का मार्गदर्शन किया।

शिक्षा के क्षेत्र में उनके योगदान को देखते हुए उन्हें वर्ष 1984 में राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित किया गया। आचार्य श्यामलाल जी ने बहुत पहले 1967 में आलोक विद्यालय की स्थापना के रूप में छोटी-सी शुरुआत की, जो आज आलोक संस्थान बन चुका है। राजस्थान के शैक्षिक संस्थानों में इसका विशेष स्थान है।

आलोक संस्थान आधुनिक शिक्षा प्रदान करने के अलावा मूल सांस्कृतिक मूल्यों को प्रतिपादित करने के लिए समर्पित प्रतिष्ठित संस्थानों में से एक है। उल्लेखनीय है कि आलोक संस्थान लगभग सात हजार बालक-बालिकाओं के समग्र विकास की दिशा में अथक प्रयास कर रहा है। इस संस्था का कार्य सराहनीय है।

मुझे यह जानकर खुशी हुई है कि आलोक संस्थान नई शिक्षण पद्धतियों को विकसित करने तथा योग प्रयोगशाला, प्रकृति विद्यालय और छात्रों के लिए व्यक्तित्व विकास सत्रों के आयोजन जैसी गतिविधियों के माध्यम से शिक्षा के क्षेत्र में प्रयोग करने की दिशा में निरंतर कार्य कर रहा है।

मुझे विश्वास है कि आलोक संस्थान द्वारा फिल्म निर्माण और उनकी नि:शुल्क स्क्रीनिंग, पुस्तकों के प्रकाशन और जन-जागरूकता कार्यक्रमों जैसी पहलों से संस्था के छात्रों के व्यक्तित्व में नए आयाम जुड़ेंगे।

समाज सेवा में आपका योगदान विशेष रूप से उल्लेखनीय है। मुझे यह जानकर खुशी हुई है कि आप धूम्रपान, मादक पदार्थों के सेवन, एड्स आदि के विरुद्ध जागरूकता अभियान चला रहे हैं और जल संरक्षण और पर्यावरण प्रदूषण के बारे में भी जागरूकता पैदा कर रहे हैं।

मुझे विश्वास है कि भविष्य में ये पहलें फलीभूत होंगी। मैं महिला और बाल विकास, ग्रामीण विकास और प्राकृतिक आपदाओं के दौरान जैसे गुजरात में भूकंप के दौरान आपकी संस्था द्वारा किए गए कार्यों की सराहना करता हूं।

मित्रो, अंत में अपनी बात समाप्त करने से पहले मैं एक पुस्तक की कुछ महत्वपूर्ण पंक्तियां आप सबसे साझा करना चाहता हूं। बहुत पते की बात कही गई है कि यदि आपके पास दस एकड़ जमीन है और आप फसलें लगाते हैं, तो आपको एक वर्ष के बाद फल मिलेंगे। यदि आपके पास दस एकड़ जमीन है और आप एक विश्वविद्यालय की स्थापना

करते हैं, तो आपको पीढ़ी-दर-पीढ़ी लाभ मिलता है। इस संस्था को जीवन के सभी क्षेत्रों में फलता-फूलता देखकर श्री श्यामलाल जी बहुत प्रसन्न और गौरवान्वित होते।

मुझे विश्वास है कि आचार्य श्यामलाल जी की प्रतिमा की स्थापना से छात्रों को अच्छा इंसान बनने और देश के विकास में योगदान करने की प्रेरणा मिलेगी।

इस समारोह में शामिल होना मेरे लिए सम्मान की बात है और मैं उदयपुर के रोटरी क्लब को इतने अच्छे आयोजन के लिए बधाई देता हूं। रोटरी क्लब की उपस्थिति जहां कहीं भी है, ये अपने समाजसेवी कार्यों के लिए सुविख्यात और प्रतिष्ठित हैं।

आज अपने शहर के प्रसिद्ध शिक्षाविद् को सच्ची श्रद्धांजलि देते हुए उन्होंने ऐसे भव्य आयोजन का आतिथ्य किया। इसके लिए मैं रोटरी क्लब, उदयपुर का विशेष आभार व्यक्त करता हूं।

मैं आलोक संस्थान, इसके शिक्षकों, अभिभावकों और छात्रों के सभी भावी प्रयासों की सफलता की कामना करता हूं।